



रतलाम कृषि समाचार



कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा (रतलाम)
शिक्षा समिति कालूखेड़ा, तह. पिपलौदा जिला-रतलाम (म.प्र.)

वर्ष - 14 अंक - 54

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

अप्रैल 2022 से जून 2022

संस्थापक

श्रद्धेय महेन्द्रसिंहजी कालूखेड़ा

अध्यक्ष

श्री के.के.सिंह

शिक्षा समिति, कालूखेड़ा

मार्गदर्शक

डॉ. एस. आर. के. सिंह

निदेशक कार्यकारी -आई.सी.ए.आर. -

कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान

संस्थान जोन-9, जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. वाय. पी. सिंह

संचालक विस्तार सेवाएँ

रा.वि.सि.कृ.वि.वि., ग्वालियर

श्री कीर्तिशरण सिंह

सचिव-शिक्षा समिति, कालूखेड़ा

प्रकाशक एवं मुख्य संपादक

डॉ. सर्वेश त्रिपाठी

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

मो. 94253 87620

संपादक

डॉ. रामधन घसवा

वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)

मो. 99280 03302

संपादक मण्डल

डॉ. बरखा शर्मा

वैज्ञानिक (गृह विज्ञान)

मो. 9754822000

डॉ. सी. आर. काँटावा

वैज्ञानिक (शास्य विज्ञान)

मो. 79766 50006

डॉ. रोहताष सिंह भदौरिया

वैज्ञानिक (उद्यानिकी)

मो. 9009635474

डॉ. सुशील कुमार

वैज्ञानिक (पशु पालन)

मो. 9350075855

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी

वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)

मो. 9993567959

डॉ. डी.आर. पचौरी

प्रक्षेत्र प्रबंधक

मो. 9644904004

डॉ. शिशु राम जाखड़

कार्यक्रम सहायक (मृदा विज्ञान)

मो. 9340593286

मनोज कुमार रजक

कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)

मो. 9977932896

अजीत जैन

स्टेनोग्राफर

मो. 9399375289

अध्यक्ष की कलम से...

आज के वर्तमान परिवेश में अधिक उत्पादन लेने के लिए कृषि क्षेत्र में असंतुलित रासायनिक उर्वरक एवं शाकनाशी और कीटनाशकों का उपयोग किया जा रहा है। जिसके प्रभाव से किसानों को कई दुष्परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं। इससे किसान का खर्च बढ़ने के बावजूद आमदनी का कोई भरोसा नहीं है। रासायनिक खाद, कीटनाशक एवं संकर बीज अत्याधिक महंगी दरों पर मिलते हैं। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम तथा पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है एवं हानिकारक कीटों की वृद्धि हो रही है। किसान बाजार पर रासायनिक उर्वरक, संकर बीज कीटनाशक एवं शाकनाशी के लिए निर्भरता बढ़ रही है। मिट्टी में विभिन्न प्रकार के लाभकारी कीट एवं जीवणुओं की कमी हो रही है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक प्रभावित खान-पान से कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो रहे हैं। पहले जितनी ही पैदावार लेने के लिए इस खेती में लगातार पहले से ज्यादा रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग करना पड़ रहा है। इसलिए, आज नहीं तो कल, रासायनिक खादों, कीटनाशकों इत्यादि के बिना खेती करना आवश्यक हो जाएगा।

मिट्टी में जीवाणुओं की मात्रा, भूमि की उत्पादकता का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। ये जीवाणु मिट्टी, हवा और कृषि-अवशेषों/बायोमास में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध पोषक तत्वों को पौधों के प्रयोग लायक बनाते हैं। इसलिये मुख्यधारा के कृषि-वैज्ञानिक भी मिट्टी में जीवाणुओं की घटती संख्या से चिन्तित हैं। कीटनाशक फसल के लिये हानिकारक कीटों के साथ-साथ मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणुओं को भी मारते हैं। रासायनिक खादें भी मिट्टी में जीवाणुओं के पनपने में बाधा पैदा करती हैं इसलिये सब से पहला काम है मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या बढ़ाना।

आम तौर पर माना जाता है, कि रासायनिक खाद का प्रयोग न करने पर उत्पादन घटता है। विशेष तौर पर शुरू के वर्षों में, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। अगर पूरी तैयारी के साथ प्राकृतिक खेती अपनायी

जाए यानि कि पर्याप्त बायोमास हर प्रकार का कृषि अवशेष या किसी भी प्रकार का वनस्पति पत्ते इत्यादि हों और पूरे ज्ञान के साथ समय पर सारी प्रक्रिया की जाए तथा अनुभवी मार्गदर्शक हो, तो पहले वर्ष भी घाटा नहीं होता। अगर यह सब न हो तो पैदावार घट सकती है। परन्तु फिर भी तीसरे वर्ष तक आते-आते उत्पादकता पुराने स्तर तक पहुँच जाती है। बाद के वर्षों में कुछ फसलों में उत्पादन काफी बेहतर भी हो सकता है। कुछ में थोड़ा कम भी हो सकता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हमें किसी एक फसल के उत्पादन पर ध्यान न देकर कृषि से प्राप्त कुल उत्पादन, कुल लागत एवं आय को देखना चाहिए। इस के साथ-साथ प्राकृतिक पद्धति में फसल की गुणवत्ता अच्छी होने से बगैर किसी विशेष प्रमाण के भी स्थानीय बाजार में ही बेहतर भाव मिल जाते हैं। जरूरत पडने पर बीमारी या कीटों के रोकथाम के लिए देशी दवाई जो किसान खुद बना सकता है, का प्रयोग करना चाहिए। वैसे प्राकृतिक खेती में मिट्टी स्वस्थ होने के कारण और जैव विविधता के कारण कीट और बीमारियों का आक्रमण कम होता है।

प्राकृतिक खेती अपनाने में लागत कम हो जाती है। परन्तु (कुछ हद तक शुरू के समय को छोड़कर) न तो उत्पादन में कमी आती है और न किसान की आय में बल्कि इस तरह की खेती उत्पादन और आय दोनों में स्थिरता लाती है। सूखे व बाढ़ में भी फसल में उतनी ज्यादा कमी नहीं आती है जितनी रासायनिक खेती में आती है। अगर उत्पादन में विशेष कमी नहीं होती तो उपभोक्ता को भी महँगी नहीं पडनी चाहिए। वर्तमान समय में जैविक उत्पाद काफी महँगे मिलते हैं परन्तु इसके पीछे कम उत्पादकता मुख्य कारण नहीं है। आज भी किसानों को तो आमतौर पर जैविक उत्पादकों के लिए बाजार भाव से अधिक कीमत मिलती है।



श्री के.के.सिंह

अध्यक्ष

शिक्षा समिति, कालूखेड़ा

सोयाबीन अधिक उत्पादन के लिए निम्न आवश्यक बातें

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से 3 वर्ष में एक बार अवश्य करें।
- मिट्टी की जांच अनुसार उर्वरक का प्रयोग करें।
- पर्याप्त नमी 6-8" (इंच) होने पर ही बुवाई करें।
- उचित बीज दर उपयोग करें।
- यदि बुवाई के लिए घर का बीज उपयोग कर रहे तो पहले स्पायरल सीड ग्रेडर के माध्यम से बीज को साफ करें अंकुरण की जांच करें। 70 प्रतिशत से अधिक अंकुरण पर ही बीज का उपयोग करें अन्यथा प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।
- यथासंभव बुवाई 20 जून से 10 जुलाई के मध्य करें।
- बुवाई यथासंभव मेड एवं कूंड (रिज एण्ड फरो) बनाकर करें।
- बुवाई के पूर्व देशी खाद (गोबर, कम्पोस्ट) का 5 टन प्रति हेक्टर उपयोग करें।
- बुवाई के समय रासायनिक खाद नमी होने पर एन.पी.के.एस. (25:60:40:20) अनुसार दें।
- पौध संख्या 4-5 लाख बनाये रखने के लिए कतार से कतार बोनी किस्म में 30 सेमी तथा बड़ी किस्मों में 45 सेमी, 2.5 से 4 सेमी

- गहराई पर बोयें। पौधों से पौधों की दूरी 10 से 15 सेमी रखी जावे
- बोने से पूर्व बीजोपचार, बीज एवं मृदाजनित रोग बचाव के लिए 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम+मेंकोजेब, कीटनाशक थायोमिथाक्जाम 30 एफएस की 10 एमएल प्रति कि.ग्रा. अथवा 8 से 10 ग्राम ट्रायकोडर्मा से प्रति किलो से उपचारित करें।
- राइजोबीयम कल्चर एवं पी.एस.बी. 5 - 10 ग्राम प्रति किलो बीज में टीकाकरण करें, गुड़ के घोल में उक्त कल्चर मिलाकर बीज पर टीकाकरण कर छाया में सुखाकर बुवाई करें।
- 45 दिन तक खरपतवार मुक्त रखने के लिए 2 बार कुरपा चलायें एवं 1 बार हाथ से निदाई करें।
- सोयाबीन के साथ अन्तर्वर्तीय फसल लगायें, जैसे अरहर : सोयाबीन (2 : 4), मक्का, सोयाबीन (2 : 2)
- कीट एवं रोग नियंत्रण के लिए वैज्ञानिक या संबंधित कृषि विकास अधिकारी से संपर्क कर कीटनाशक का प्रयोग करें।
- जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सोयाबीन की कम अवधि एवं मध्यम अवधि की प्रजाति किसान अवश्य लगायें।

निःशुल्क

कृषि संबंधी जानकारी एवं समस्या समाधान हेतु
किसान काल सेंटर 1800-180-1551- सुबह 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक
म.प्र. शासन 1800-233-4433

उर्वरता मूल्यांकन हेतु मृदा परीक्षण

सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीक

सोयाबीन की महत्वपूर्ण प्रजातियाँ एवं विशेषताएँ

मृदा नमूनों का एकत्रीकरण :-

- एक समान क्षेत्र से नमूना लेने के लिए पूरे क्षेत्र के रकवे (1 हेक्टेयर) के अनुसार 15 से 20 विभिन्न स्थानों से थोड़ा-थोड़ा नमूना एक ही बर्तन में एकत्रित करते हैं।
- नमूना लेने के लिए फावड़े, खुरपी कुदाल आदि से 15-20 से.मी. गहराई का एक गड्ढा खोदे, गड्ढे में गिरी हुई मिट्टी निकालकर गड्ढे को साफ कर लीजिए। खुरपी से V आकार के गड्ढे की दीवाल में से ऊपर से नीचे तक एक बराबर पट्टी काट लीजिए। इस पट्टी से कटी हुई मिट्टी को अच्छी तरह मिलाकर इसमें से एक मुट्ठी मिट्टी साफ बर्तन में रख लें। इस प्रकार हर एक स्थान पर यह प्रक्रिया दोहरायें।
- इस प्रकार से एकत्रित मिट्टी को अच्छी तरह से मिलाकर, इसके चार भाग करें। इन चार भागों में से दो आमने सामने के भाग हटा कर फिर मिलाए, पुनः चार भाग करें, चार भाग में से दो भाग हटा कर दो भाग पुनः अच्छे से मिलाए, यह प्रक्रिया तब तक करें जब तक एक भाग 500 ग्राम न हो जावें।
- अब एक भाग को साफ सुथरी थैली में रखें। नमूना भेजने से पहले छायादार स्थान में सुखाकर, कूटकर, बारीक करके ही थैली में भरें तो उत्तम रहेगा।
- इस नमूने के साथ नमूना सूचना पत्रक जिसमें किसान का नाम एवं पूरा खेत की पहचान, नमूना लेने की तिथि, जमीन का ढलान सिंचाई का उपलब्ध साधन पानी निकास, अगली ली जाने वाली फसल का नाम, पिछले 3 साल की फसलों का ब्योरा एवं कोई अन्य समस्या आदि का विवरण कपड़े की थैली में रखकर इसका मुंह में बांधकर अपनी नजदीकी मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेज दें।
- उस स्थान से नमूना न लें जहां पर खाद या कोई अन्य भूमि सुधार रसायन तत्काल डाला गया हो।

सावधानियाँ :-

- नमूना लेते समय यह ध्यान देना चाहिए कि असाधारण क्षेत्रों के पास से नमूना न लिया जावे जैसे कि पानी के बंधाव के नजदीक वाले क्षेत्र, मेड़, सिंचाई, नाली, पेड़, झाड़ियाँ, खाद के गड्ढे आदि।
- मिट्टी का नमूना इस तरह से लिया जाना चाहिए जिससे वह पूरे खेत की मिट्टी का प्रतिनिधित्व करें।
- जब एक ही खेत में फसल की बढ़वार में या जमीन की संरचना में, रंग में, ढलान में अंतर हो या प्रबंधन में अंतर हो तो हर भाग से अलग-अलग नमूने लेने चाहिए यदि उपरोक्त सभी स्थिति खेत में एक जैसी हो तब एक ही नमूना लिया जा सकता है ध्यान रहे कि एक नमूना ज्यादा से ज्यादा 1 हेक्टेयर लिया जा सकता है।
- खड़ी फसल में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखाई दें और मिट्टी का नमूना लेना हो तो फसल की कतारों के बीच में से मिट्टी का नमूना लेना चाहिए।
- बिना जंग लगे हुए औजारों का उपयोग करना चाहिए।
- नमूनों के साथ भेजी जाने वाली जानकारियों की दो प्रति बनाए जिसमें से एक प्रति अपने पास रखें और एक प्रति नमूनों के साथ भेजे।
- मृदा परीक्षण होने के बाद अनुशंसा के अनुसार भूमि में विभिन्न तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए निर्देशित उर्वरक/खाद का उपयोग करें।
- मृदा परीक्षण पर आधारित उर्वरक, उपयोग से प्राप्त नतीजे, फसल काटने के बाद मृदा परीक्षक को सूचित करें, और उचित सलाह लेते रहें।
- दलहन फसलों हेतु दो से तीन वर्ष और सब्जियों हेतु प्रतिवर्ष मृदा परीक्षण करायें।
- मृदा नमूना बुवाई के कम से कम एक महीने पूर्व परीक्षण के लिए भेजे। जिससे समय पर मिट्टी की जांच रिपोर्ट मिल जाए हम उसके अनुसार खाद एवं उर्वरक व भूमि सुधार का उपयोग किया जा सके।

किस्म का नाम	पकने की अवधि (दिन)	उपज प्रति हे. (क्विं.)	रोग एवं कीट प्रतिरोधी	विशेषताएँ
आर.वी.एस.-2001-04	90-95	20-25	पीला मोजेक प्रतिरोधी	इसकी हर फली में 2 से 3 दाने होते हैं
जे.एस.-20-34	85-88	22-25	पीला मोजेक प्रतिरोधी	यह कम समय में पकने वाली किस्म है
आर.वी.एस.-2002-04	92-96	18-20	पीला मोजेक, चक्र भृंग, जीवाणु धब्बा प्रतिरोधी	यह मध्यम समय में पकने वाली किस्म है
आर.वी.एस.-2001-18	90-95	22-24	चारकोल जीवाणु धब्बा झुलसा पीला मोजेक आदि से प्रतिरोधी	यह अधिकतर रोगों के प्रति सहनशील किस्म है
जे.एस.-20-29	90-95	20-25	चारकोल, पीला मोजेक आदि से प्रतिरोधी	इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं।
जे.एस.-20-98	96-98	25-28	पीला मोजेक विषाणु रोगी, चारकोल, प्रति धब्बा आदि से प्रतिरोधी	यह समय पर बुवाई, मध्यम एवं अधिक वर्षा की स्थिति में उपयुक्त
एन. आर. सी. 130	92	30	चारकोल रोट टारगेट लीफ स्पॉट एवं पोड ब्लाइट के लिये प्रतिरोधक	सीमित वृद्धि, रोये रहित चिकनी फलियाँ, पीली नाभिका
जे.एस. 20-116	95-100	30	चारकोल रोट, पीला मोजेक वायरस, रायजक्टोनिया एरियल ब्लाइट के लिए प्रतिरोधी	अर्द्ध सीमित वृद्धि, रोये रहित, सफेद फूल, काली नाभिका
जे.एस. 20-94	95-100	30	चारकोल रोट, पीला मोजेक वायरस, लीफ स्पॉट तथा तना मक्खी, चक्र भृंग एवं पर्णभक्षी कीटों के लिए प्रतिरोधी	अर्द्ध सीमित वृद्धि, गोल हलके भूरे रोये, बैंगनी फूल, काली नाभिका
एन. आर. सी. 127	100-104	22	पीला मोजेक वायरस, फली छेदक एवं पर्णभक्षी कीटों के लिए प्रतिरोधी	कुनिट्ज ट्रिस्पिन इनहिबीटर मुक्त प्रदेश की पहली किस्म। अर्द्ध सीमित वृद्धि, सफेद फूल, भूरे रोए एवं काली नाभिका
जे.एस. 20-69	91-97	23	चारकोल रॉट, पीला मोजेक वायरस, पॉड ब्लाइट के लिए प्रतिरोधी	कुनिट्ज ट्रिस्पिन इनहिबीटर मुक्त प्रदेश की पहली किस्म। अर्द्ध सीमित वृद्धि, सफेद फूल, भूरे रोए एवं काली नाभिका
एन. आर. सी. 132	-	24	पर्पल सीड स्टाइन के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी, पॉड ब्लाइट के लिए मध्यम प्रतिरोधी	भारत की प्रथम लिपोक्सीजिनेज 2 मुक्त प्रजाति। अर्द्ध सीमित वृद्धि, नुकीली अंडाकार पतियाँ, काली नाभी



सतह से 6" तक का नमूने को ले



नमूना का विभाजन



नमूना को छाया में सुखाने



नमूना पत्रक को पूरा भरें

खरीफ की दलहनी एवं तिलहनी फसलों की महत्वपूर्ण प्रजातियाँ एवं विशेषताएँ

किस्म का नाम	पकने की अवधि (दिन)	उपज प्रति हे. (क्विं.)	रोग एवं कीट प्रतिरोधी	विशेषताएँ
मूंग				
आई.पी.एम.-205-07	50-55	12-14	पीत शिरा मोजेक	ग्रीष्म कालीन मौसम के लिये उपयुक्त
आई.पी.एम.-410-03	60-65	11-13	पीला मोजेक प्रतिरोधी	ग्रीष्म व बसंत मौसम के लिये उपयुक्त
जी.ए.एम.-5	60-65	18-19	पीला मोजेक वायरस	अधिक उत्पादन के लिये उपयुक्त
ए.के.एम.-9904	70-75	10-12	चूर्णिल आसिता के प्रति सहनशील	इस दाना मध्यम से बड़ा होता है।
उड़द				
इन्द्रा उड़द प्रथम	70-75	12-13	चूर्णिल आसिता के प्रति प्रतिरोधी	यह मध्यम दिवस में पककर तैयार हो जाती है
पंत उड़द-31	75-80	15-16	पीला मोजेक वायरस	अधिक उत्पादन के लिये उपयुक्त
अरहर				
आर.वी.आई. सी.पी.एच.-2671	165-185	22-28	उकटा व विषाणु रोग के प्रति सहनशील	यह विश्व की प्रथम जीव द्रव्य नरबन्धता आधारित किस्म है
टी.जे.टी.-501	165-180	18-20	उकटा व फाईटोथोरा रोग व फली छेदक के प्रति सहनशील	यह कम अवधि वाली किस्म है।
फूले. टी.-12 (राजेश्वरी)	135-150	18-20	सुखा रोधी	कम समय में पकने वाली किस्म
मूंगफली				
जे.जी.एन.-23	130-140	16-18	टिक्का रोग के प्रति सहनशील	सुखा सहनशील किस्म
जे.एल.-501	105-110	20-25		शीघ्र पकने वाली एवं अधिक उपज देने वाली किस्म
तिल				
टी.के.जी.-308	80-85	6-7	तना व जड़ सड़न रोग के लिये सहनशील	इसका दाना सफेद एवं तेल की मात्रा 46 से 50 प्रतिशत
जे.टी.-12	82-85	6.5-7	मैक्रोफोमिया रोग के प्रति सहनशील	ग्रीष्मकालीन खेती के लिये उपयुक्त
जे.टी.-14	82-85	7-7.5	मैक्रोफोमिया रोग के प्रति सहनशील	ग्रीष्मकालीन खेती के लिये उपयुक्त

मक्का की उन्नतशील प्रजातियाँ

जवाहर मक्का 215, एचक्यूपीएम, एचक्यूपीएम-1, एचक्यूपीएम -1आर, एचक्यूपीएम-5, जेवीएम 421, पीएच 1974,

ज्वार की उन्नतशील प्रजातियाँ

दाने के लिए - सीएसएच 5, सीएसएच 6, सीएसएच 9, सीएसएच 14, सीएसएच 13, एसपीवी 245, एसपीवी 346
चारे के लिए - एसएसवी 53, एसएसजी 59-3, एसएसवी 96, एसएसवी 84, आरवीआईसीएसएच-28, आरवीजे 1862

ग्रीष्म ऋतु में लगाई जाने वाली प्रमुख सब्जियों की प्रजातियाँ

किस्म का नाम	प्राप्ति स्थान	बीज दर प्रति हे.	विशेषताएँ	उत्पादन प्रति हेक्ट. /क्विंटल
टमाटर				
काशी हेमन्त	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	400 ग्राम	प्रथम तुड़ाई 85 दिन बाद, 80 से 100 ग्राम प्रति फल भार	400-600
पूसा - 120	पूसा नई दिल्ली	400 ग्राम	सूत्रकर्मी प्रतिरोधी फलों में बीज कम होते हैं	300
पूसा संकर-4	पूसा नई दिल्ली	125 ग्राम	सूत्रकर्मी प्रतिरोधी	420
भिर्च				
काशी अनमोल	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	300 ग्राम	प्रथम तुड़ाई 85 दिन बाद	250
काशी अर्ली (संकर)	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	300 ग्राम	75 दिन के बाद तुड़ाई प्रारंभ	250
भिण्डी				
काशी भैरव	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	8-10 कि.ग्रा.	20-28 फल प्रति पौधा	190
काशी महिमा	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	6-7 कि.ग्रा.	पीतशिरा मोजक से प्रतिरोधी	200
बैंगन				
काशी संदेश (संकर)	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	400 ग्राम	प्रथम तुड़ाई 80-85 दिन बाद फल का ओसत भार 350 ग्राम	700
काशी कोमल (संकर)	आई.आई.वी. आर. वाराणसी	350 ग्राम	फलों की लंबाई 6.5-7.5 से.मी	400

बकरियों और भेड़ों के टीकाकरण का कार्यक्रम

क्र.	रोग का नाम	टीकाकरण का कार्यक्रम	
		प्राथमिक टीका	टीका का आवर्ती
1	खुरपका - मुंहपका (FMD)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	वर्ष में दो बार (मार्च और सितम्बर)
2	गलाघोंटा (HS)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	प्रत्येक वर्ष मानसून से पहले
3	लगाड़ा बुखार (Black Quarter)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	प्रत्येक वर्ष मानसून से पहले
4	एंथ्रैक्स (Anthrax)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	स्थानिक भागों में हर वर्ष
5	बकरी प्लेग (PPR)	3 माह या इससे ऊपर को यदि माँ को टीका लगा हो एक सप्ताहिक अवस्था में यदि माँ को टीका न लगा हो	प्रत्येक 3 वर्ष में
6	एंटेरोटॉक्सिमिया (Enterotoxemia)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	प्रत्येक वर्ष मानसून से पहले बुस्टर 14 दिन के बाद प्राथमिक और हर नियमित बुखार के बाद
7	भेड़ का घेचक (Sheep Pox)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	वार्षिक (दिसम्बर)
8	बकरी का घेचक (Goat Pox)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	वार्षिक (दिसम्बर)
9	कंटेजियस कैप्राइन नकल्यूरोनिमोनिया (CCPP)	3 माह या उससे ऊपर के उम्र के पशुओं को	वार्षिक (दिसम्बर)

ग्रीष्म ऋतु में पशुपालन एवं सावधानियाँ

- ✓ पशुओं के हरे चारे के लिए जवाहर चरी-6/एम.पी.चरी, लोबिया में लोबिया-1, बुन्देल-1 एवं कोहिनूर आदि बोएं।
- ✓ पशुओं की किलनी जू से रक्षा हेतु मैलाथियान/क्लीनर/व्यूटॉक्स का उपयोग करें।
- ✓ गलघोट्टू एवं लंगड़ी बुखार का टीका अवश्य लगायें। गत वर्ष गायों में लंगड़ी बुखार का असर देखा गया था।
- ✓ मुर्गियों को परजीवियों से बचाने हेतु पिपराजिन दवा पानी में घोलकर पिलायें।
- ✓ पशुओं को सीधी धूप से बचाएं, उन्हें बाहर चराने न ले जाएं।
- ✓ अधिक गर्मी की स्थिति में पशुओं के शरीर पर पानी का छिड़काव करें।

संतुलित आहार का आधार - पोषक वाटिका

पोषण वाटिका या गृह वाटिका उस वाटिका को कहा जाता है जो घर के अगल-बगल में या घर के आंगन में ऐसी खुली जगह पर होती है जहां पारिवारिक श्रम से परिवार के इस्तेमाल हेतु विभिन्न मौसमी फल तथा विभिन्न सब्जियां उगाई जाती है।

पोषण वाटिका को कोई भी परिरूप दे सकते हैं। चाहे वह गोलाकार हो या वर्गाकार। आप इसे उपलब्ध स्थान के अनुसार एक अनुपात में छोटा या बड़ा कर सकते हैं।

क्यारियां बनाने समय इस बात का ध्यान रहे कि हर क्यारी की चौड़ाई 2 फुट से ज्यादा ना हो। क्यारियों के बीच में चलने की जगह या रास्ता रखें जिससे निराई - गुड़ाई का कार्य आसानी से किया जा सके। दक्षिण की तरफ छोटे पौधे (जैसे - धनिया, पालक, मैथी) एवं उत्तर की तरफ वे पौधे जिनकी ऊंचाई अपेक्षाकृत ज्यादा हो वे लगाएं। इससे दक्षिण की तरफ वाले पौधों की छाया से पीछे वाले पौधे नहीं छुपेंगे एवं हर पौधे को उचित धूप मिलेगी। यदि फलदार वृक्ष लगा रहे हैं तो वे भी उत्तर की ओर ही लगाएँ। पोषक वाटिका की मेड़ या सबसे बाहर वाले घेरे को आप ऊंचा उठाकर उसमें भी मूली, चुकन्दर, गाजर जैसी सब्जियां उगा सकते हैं। पोषण वाटिका वाले स्थान की अच्छे से खुदाई कर इसमें क्यारियां बना दें। इसमें 5 ग्राम प्रति वर्ग मीटर क्षेत्रफल के हिसाब से ट्राइकोडर्मा मिलाएं। ट्राइकोडर्मा एक मित्र फफूंद है जो मिट्टी में उपस्थित हानिकारक फफूंद से पौधों की रक्षा करती है। इसके अतिरिक्त वर्मीकम्पोस्ट (केंचुए की खाद) का 0.75 - 1 किलो प्रति वर्ग मीटर क्षेत्रफल के हिसाब से उपयोग करना उत्तम रहता है। इसका बेहतर तरीका यह है कि आप बुवाई से 5-7 दिन पहले ट्राइकोडर्मा व वर्मीकम्पोस्ट को मिलाकर छायादार जगह पर रखें व नमी बनाएं रखने के लिए पानी छीटें। 7 दिन बाद इस मिश्रण को बुवाई के समय क्यारियों में डालें। यदि वर्मीकम्पोस्ट नहीं है तो सड़े हुए गोबर



की खाद लें। यह खाद आपको वर्मीकम्पोस्ट की तिगुनी मात्रा में डालनी होगी एवं इसे आप बुवाई से 21 दिन पहले ही क्यारियों में डालें। ध्यान रहे कि ट्राइकोडर्मा को नमी चाहिए इसलिए मिट्टी एकदम सूखी न हो।

गमला गृहवाटिका के लिए गमलों का चयन व तैयारी

गृहवाटिका हेतु गमलों के अलावा पेटियां, डिब्बे, कट्टे, टब आदि भी उपयोग में लाये जा सकते हैं। परन्तु इनका आकार 12 इंच से कम नहीं होना चाहिए। गमलों में नीचे अतिरिक्त पानी निकलने के लिए छेद अवश्य करें नहीं तो पानी इकट्ठा होने से जड़ों में सड़न हो सकती है। इसके अलावा अत्यधिक गर्मी से बचाने के लिए गहरे रंग के गमलों की हल्के रंग से पुताई कर काम में लें। टमाटर, खीरा, बैंगन जैसे पौधों के लिए बड़े गमले या बक्से काम में ले (24-30 इंच का आकार कम से कम)। लोहे के डिब्बों की जगह मिट्टी के गमलो को वरीयता दें क्योंकि लोहे व प्लास्टिक के गमले अत्यधिक गर्म व ठण्डे हो सकते हैं। गमलों का चुनाव पौधों के आकार व बढ़त के अनुरूप करें व गमले रखने का स्थान ऐसा हो जहां सूरज की रोशनी पर्याप्त मात्रा में आती हो।

गमलों को भरने के लिए बराबर मात्रा में मिट्टी, बालू/रेत और सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट का मिश्रण बनाएं। इस मिश्रण में 10-15 ग्राम ट्राइकोडर्मा मिलाकर 10-15 दिनों तक नमी युक्त स्थान पर रखें फिर गमलों में भरें। इससे आप पौधों को फफूंद से फैलने वाली बीमारियों से

बचा सकेंगे। ध्यान रखे कि गमलों के तले में किए गए छेदों पर कंकड़ या मिट्टी के बर्तनों का टुकड़ा इस प्रकार रखें कि अतिरिक्त पानी की निकासी हो सके। गमलों में मिश्रण को भरे और पानी ठहरने के लिए 1 इंच ऊपर से खाली अवश्य छोड़ें।

बुवाई व रोपाई

बुवाई की तकनीक के अनुसार सब्जियां दो तरीकों से बोई जा सकती है -

1. पौध तैयार कर बुवाई: बैंगन, गोभी (फूल व पत्ता), प्याज, टमाटर, मिर्च, ब्रोकली, सलाद आदि की पौध तैयार कर जब 25-28 दिन हो जाए तब रोपाई की जाती है।

2. बीज से बुवाई: लहसुन, गाजर, मूली धनिया, भीण्डी, पालक, मैथी, सेमफली, सहजन की फली आदि आप सीधे बीज से बुवाई कर सकते हैं।

पौध तैयार करने की विधि

यह ऊंची उठी हुई क्यारी में अथवा बड़े गमलों में किया जा सकता है। इसमें 5-7 से.मी. की दूरी पर 1-1.5 से.मी. गहरी पंक्ति बनाकर इसमें बीज डालें। अब इन पंक्तियों को मिट्टी या खाद से हल्के से ढंक दें व हर शाम हल्का पानी डालें।

पौध रोपाई की विधि

इसके लिए भी शाम का समय उपयुक्त रहता है। पौधे को निकालने से पहले गमले/क्यारी को गीला कर दें। जिससे पौध आराम से बिना जड़ों को नुकसान पहुँचाये निकाल सकते हैं। एक गमले में एक पौध लगाइये और यदि गमला/बक्सा बड़ा है तो अधिक पौध भी लगाई जा सकती है परन्तु ध्यान रहे कि पौध से पौध की दूरी 1 से 1.5 फीट होनी चाहिये। रोपाई की जाने वाली पौध की जड़ों को 100 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति लीटर पानी के मिश्रण में आधे घण्टे तक डुबाकर फिर रोपण करें। शेष बचे घोल को भी गमलों में छिड़क दें।



MPUAT उदयपुर में आयोजित सेमिनार में बेस्ट पोस्टर का अवार्ड प्राप्त करते हुए



बकरी पालन प्रशिक्षण में प्रमाण पत्र वितरण



कीटनाशक विक्रेता प्रशिक्षण में प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम



RVSKVV ग्वालियर में मेले में लगाये गये स्टॉल का अवलोकन करते हुए कृषि मंत्री माननीय श्री नरेंद्रसिंह तोमर



उद्यानिकी विषय पर किसानों को प्रशिक्षण



मधुमक्खी पालन प्रशिक्षणार्थियों को बी-बॉक्स वितरण कार्यक्रम



अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम



केवीके परिसर का अवलोकन करते हुए मुख्य कार्य. अ., जिला पंचायत रतलाम

कृषि में तकनीकी सलाह हेतु सम्पर्क ☎ 07414-276314, Website: www.kvkratlam.org

प्रेषक :

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र जावरा

ग्राम+पोस्ट-कालूखेड़ा, तह. पिपलौदा, जिला-रतलाम (म.प्र.)

पिन कोड-457339, दूरभाष - 07414-276314

ई मेल - kvkratlam@gmail.com वेबसाईट-www.kvkratlam.org

बुक-पोस्ट

प्रति,

.....

.....